वर्ष-17 अंक-265 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, सोमवार 26 सितम्बर 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक
नगर छाया
आप की आवाज़.....

RNI N.UPHIN/2007/27090

अलसी की वैज्ञानिक विधि से करें खेती, होगा अधिक लाभ

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दिलीप नगर कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि अलसी की खेती बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि इससे तेल के साथ-साथ रेशा भी निकलता है उन्होंने बताया कि पूरे देश में अलसी का क्षेत्रफल 7.98 लाख हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल वर्ष 2018-19 में 0.28 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 0.18 लाख मैट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि इसमें प्रोटीन 18 से 20त्न, कार्बोहाइड्रेट 18 से 88त्न, वसा 38 से 42त्न,कैलोरी 530 किलो कैलोरी, रेशा 20 से 22त्न, विटामिंस, मिनरल्स के साथ-साथ एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि अलसी में ओमेगा 3 फैटी एसिड प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। डॉ राय ने बताया कि अलसी की बुवाई का समय बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए अक्टूबर का प्रथम पखवारा तथा शेष उत्तर प्रदेश में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में बुवाई करनी चाहिए। बुवाई हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अलसी की प्रजातियां जैसे गरिमा, शुभरा, श्वेता, नीलम,पद्मिनी,शेखर, गौरव,शिखा,रश्मि,पार्वती, रुचि सहित अन्य हैं जबकि वर्ष 2019 में विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या एवं अन्नू प्रजातियां पूरे देश के लिए संस्तुति हैं उन्होंने बताया कि सामान्यतः अलसी में ओमेगा-3 फैटी एसिड 50 से 62त्न होता है जबकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या प्रजाति में ओमेगा-3 फैटी एसिड 62.7त्न पाया जाता है। उन्होंने इसके प्रयोग से होने वाले लाभों के बारे में बताया कि ओमेगा-3 कोलेस्ट्रॉल को घटाता है अर्थराइटिस की समस्या को दूर करता है। इसमें 20 से 22त्न रेशा होता है जो मधुमेह को कम करता है अलसी में लिग्निन भी पाया जाता है जो कैंसर को नियंत्रित करने में लाभकारी है विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह ने बताया कि अलसी के तेल से ओमेगा 3 कैप्सूल दवाइयों के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा मिल्क केक, बिस्किट के लिए बेकरी में भी प्रयोग होता है। तथा लड्डू बर्फी जैसी मिठाइयां भी बनती हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभकारी हैं।

SKS NEWS

हिन्दी दैनिक

समाज का साथी

कानपुर नगर से प्रकाशित

अंक: 24 | कानपुर, मंगलवार 26 सितंबर-2023 | पृष्ठ -8

अलसी की वैज्ञानिक विधि से करें खेती, होगा भारी लाभ

नगर प्रतिनिधि

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित दिलीप नगर कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि अलसी की खेती बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि इससे तेल के साथ-साथ रेशा भी निकलता है उन्होंने बताया कि पूरे देश में अलसी का क्षेत्रफल 7.98 लाख हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल वर्ष 2018-19 में 0.28 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 0.18 लाख मैट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि इसमें प्रोटीन 18 से 20ब्र, कार्बोहाइड्रेट 18 से 88ब्र, वसा 38 से 42ब्र,कैलोरी 530 किलो कैलोरी, रेशा 20 से 22ब्र, विटामिंस, मिनरल्स

के साथ-साथ एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि अलसी में ओमेगा 3 फैटी एसिड प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। डॉ राय ने बताया कि अलसी की बुवाई का समय बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए अक्टूबर का प्रथम पखवारा तथा शेष उत्तर प्रदेश में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में बुवाई करनी चाहिए। बुवाई हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अलसी की प्रजातियां जैसे गरिमा, शुभरा, श्वेता, नीलम, पद्मिनी, शेखर, गौरव,शिखा,रश्मि,पार्वती, रुचि सहित अन्य हैं जबकि वर्ष 2019 में विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या एवं अन्नू प्रजातियां पूरे देश के लिए संस्तुति हैं उन्होंने बताया कि सामान्यत: अलसी में ओमेगा-3 फैटी एसिड 50 से 62ब्र होता है जबकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या प्रजाति में ओमेगा-3 फैटी एसिड 62.7ब्र पाया जाता है। उन्होंने इसके प्रयोग से होने वाले लाभों के बारे में बताया कि ओमेगा-3 कोलेस्ट्रॉल को घटाता है अर्थराइटिस की समस्या को दूर करता है। इसमें 20 से 22ब्र रेशा होता है जो मधुमेह को कम करता है अलसी में लिग्निन भी पाया जाता है जो कैंसर को नियंत्रित करने में लाभकारी है विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह ने बताया कि अलसी के तेल से ओमेगा 3 कैप्सूल दवाइयों के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा मिल्क केक, बिस्किट के लिए बेकरी में भी प्रयोग होता है। तथा लड्डू बर्फी जैसी मिठाइयां भी बनती हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभकारी हैं।

Title-code: UPHIN-48963

E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com

सत्य का असर

समाचार पत्र

26.09.2023 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

Top News

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

अलसी की वैज्ञानिक विधि से करें खेती, होगा अधिक लाभ

पत्रकार जीतेंद्र सिंह पटेल Reporter

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दिलीप नगर कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि अलसी की खेती बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि इससे तेल के साथ-साथ रेशा भी निकलता है उन्होंने बताया कि पूरे देश में अलसी का क्षेत्रफल 7.98 लाख हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल वर्ष 2018-19 में 0.28 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 0.18 लाख मैट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि इसमें प्रोटीन 18 से 20%, कार्बोहाइड्रेट 18 से 88%, वसा 38 से 42%,कैलोरी 530 किलो कैलोरी, रेशा 20 से 22%, विटामिंस, मिनरल्स के साथ-साथ एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि अलसी में ओमेगा 3 फैटी एसिड प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। डॉ राय ने बताया कि अलसी की बुवाई का समय बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए अक्टूबर का प्रथम पखवारा तथा शेष उत्तर प्रदेश में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में बुवाई करनी चाहिए। बुवाई हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अलसी की प्रजातियां जैसे गरिमा, शुभरा, श्वेता, नीलम,पद्मिनी,शेखर, गौरव,शिखा,रश्मि,पार्वती, रुचि सहित अन्य हैं जबकि वर्ष 2019 में विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या एवं अन्नू प्रजातियां पूरे देश के लिए संस्तुति हैं उन्होंने बताया कि सामान्यतः अलसी में ओमेगा-3 फैटी एसिड 50 से 62% होता है जबकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या प्रजाति में ओमेगा-3 फैटी एसिड 62.7% पाया जाता है। उन्होंने इसके प्रयोग से होने वाले लाभों के बारे में बताया कि ओमेगा-3 कोलेस्ट्रॉल को घटाता है अर्थराइटिस की समस्या को दूर करता है। इसमें 20 से 22% रेशा होता है जो मधुमेह को कम करता है अलसी में लिग्निन भी पाया जाता है जो कैंसर को नियंत्रित करने में लाभकारी है विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह ने बताया कि अलसी के तेल से ओमेगा 3 कैप्सूल दवाइयों के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा मिल्क केक, बिस्किट के लिए बेकरी में भी प्रयोग होता है। तथा लड्डू बर्फी जैसी मिठाइयां भी बनती हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभकारी हैं।

R.N.I.No-UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

● अंक 147 ● कानपुर, मंगलवार 26 सितम्बर 2023 = पृष्ठ: 8

अलसी की वैज्ञानिक विधि से करें खेती, होगा भारी मुनाफा

हिन्दुस्तान का इतिहास कानपुर-सीएसए के अधीन संचालित दिलीप नगर कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि अलसी की खेती बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे तेल के साथ-साथ रेशा भी निकलता है उन्होंने बताया कि पूरे देश में अलसी का क्षेत्रफल 7.98 लाख हेक्टेयर है उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल वर्ष 2018-19 में 0.28 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 0.18 लाख मैट्रिक टन था उन्होंने बताया कि इसमें प्रोटीन 18 से 20त्न, कार्बोहाइड्रेट 18 से 88त्न, वसा 38 से 42त्न, कैलोरी 530 किलो कैलोरी, रेशा 20 से 22त्न, विटामिंस, मिनिरल्स के साथ-साथ एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं उन्होंने बताया कि अलसी में ओमेगा 3 फैटी एसिड प्रचुर मात्रा में पाया जाता है डॉ राय ने बताया कि अलसी की बुवाई का समय बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए अक्टूबर का प्रथम पखवारा तथा शेष उत्तर प्रदेश में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में बुवाई करनी चाहिए बुवाई हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अलसी की प्रजातियां जैसे गरिमा, शुभरा, श्वेता, नीलम,पद्मिनी,शेखर, गौरव,शिखा,रश्मि,पार्वती, रुचि सहित अन्य हैं जबकि वर्ष 2019 में विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या एवं अन्नू प्रजातियां पूरे देश के लिए संस्तुति हैं उन्होंने बताया कि सामान्यत: अलसी में ओमेगा-3 फैटी एसिड 50 से 62त्न होता है जबकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या प्रजाति में ओमेगा-3 फैटी एसिड 62.7त्न पाया जाता है। उन्होंने इसके प्रयोग से होने वाले लाभों के बारे में बताया कि ओमेगा-3 कोलेस्ट्रॉल को घटाता है अर्थराइटिस की समस्या को दूर करता है इसमें 20 से 22त्न रेशा होता है जो मधुमेह को कम करता है अलसी में लिग्निन भी पाया जाता है जो कैंसर को नियंत्रित करने में लाभकारी है विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह ने बताया कि अलसी के तेल से ओमेगा 3 कैप्सूल दवाइयों के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा मिल्क केक, बिस्किट के लिए बेकरी में भी प्रयोग होता है। तथा लड्डू बर्फी जैसी मिठाइयां भी बनती हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभकारी हैं।

अंक-199 कानपुर, मंगलवार 26 सितम्बर 2023 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मौहदा, बादा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

facebook aajkakannur aajkakannur 83033 31758 aajkakannur@gmail.com rediff aajkakannur

अलसी की वैज्ञानिक विधि से करें खेती, होगा भारी मुनाफा

आज का कानपुर

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित दिलीप नगर कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि अलसी की खेती बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे तेल के साथ-साथ रेशा भी निकलता है उन्होंने बताया कि पूरे देश में अलसी का क्षेत्रफल 7.98 लाख हेक्टेयर है उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल वर्ष 2018-19 में 0.28 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 0.18 लाख मैट्रिक टन था उन्होंने बताया कि इसमें प्रोटीन 18 से 20ब्र, कार्बोहाइड्रेट 18 से 88ब्र, वसा 38 से 42ब्र, कैलोरी 530 किलो कैलोरी, रेशा 20 से 22ब्र, विटामिंस, मिनिरल्स के साथ-साथ एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं उन्होंने बताया कि अलसी में ओमेगा 3 फैटी एसिड प्रचुर मात्रा में पाया जाता है डॉ राय ने बताया कि अलसी की बुवाई का समय

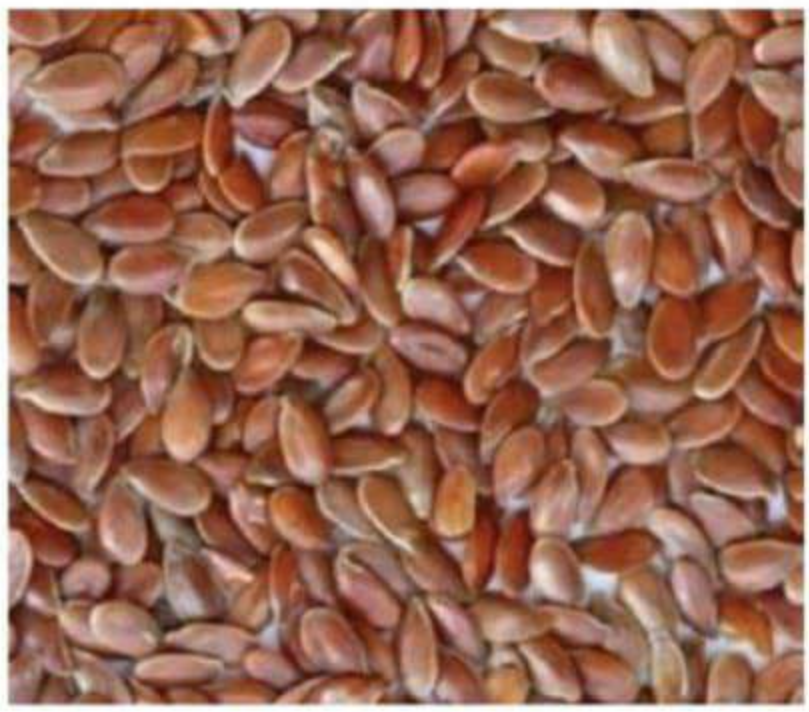

बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए अक्टूबर का प्रथम पखवारा तथा शेष उत्तर प्रदेश में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में बुवाई करनी चाहिए बुवाई हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अलसी की प्रजातियां जैसे गरिमा, शुभरा, श्वेता, नीलम, पद्मिनी, शेखर, गौरव, शिखा, रश्मि, पार्वती, रुचि सहित अन्य हैं जबकि वर्ष 2019 में विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या एवं अन्नू प्रजातियां पूरे देश के लिए संस्तुति हैं उन्होंने बताया कि सामान्यत: अलसी में ओमेगा-3 फैटी एसिड 50 से 62ब्र होता है जबकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या प्रजाति में ओमेगा-3 फैटी एसिड 62.7ब्र पाया जाता है। उन्होंने इसके प्रयोग से होने वाले लाभों के बारे में बताया कि ओमेगा-3 कोलेस्ट्रॉल को घटाता है अर्थराइटिस की समस्या को दूर करता है इसमें 20 से 22ब्र रेशा होता है जो मधुमेह को कम करता है अलसी में लिग्निन भी पाया जाता है जो कैंसर को नियंत्रित करने में लाभकारी है विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह ने बताया कि अलसी के तेल से ओमेगा 3 कैप्सूल दवाइयों के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा मिल्क केक, बिस्किट के लिए बेकरी में भी प्रयोग होता है। तथा लड्डू बर्फी जैसी मिठाइयां भी बनती हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभकारी हैं।

कानपुर महानगर
वर्षः 08 | पृष्ठ : 08
अंकः 109
मूल्यः ₹ 2.00/-
मंगलवार | 26 सितंबर, 2023

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक

'अलसी की वैज्ञानिक विधि से करें खेती'

शाश्वत टाइम्स संवाददाता

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दिलीप नगर कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि अलसी की खेती बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि इससे तेल के साथ-साथ रेशा भी निकलता है उन्होंने बताया कि पूरे देश में अलसी का क्षेत्रफल 7.98 लाख हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल वर्ष 2018-19 में 0.28 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 0.18 लाख मैट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि इसमें प्रोटीन 18 से 20त्न, कार्बोहाइड्रेट 18 से 88त्न, वसा 38 से 42 प्रतिशत, कैलोरी 530 किलो कैलोरी, रेशा 20 से 22प्रतिशत , विटामिंस, मिनरल्स के साथ-साथ एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि अलसी में ओमेगा 3 फैटी

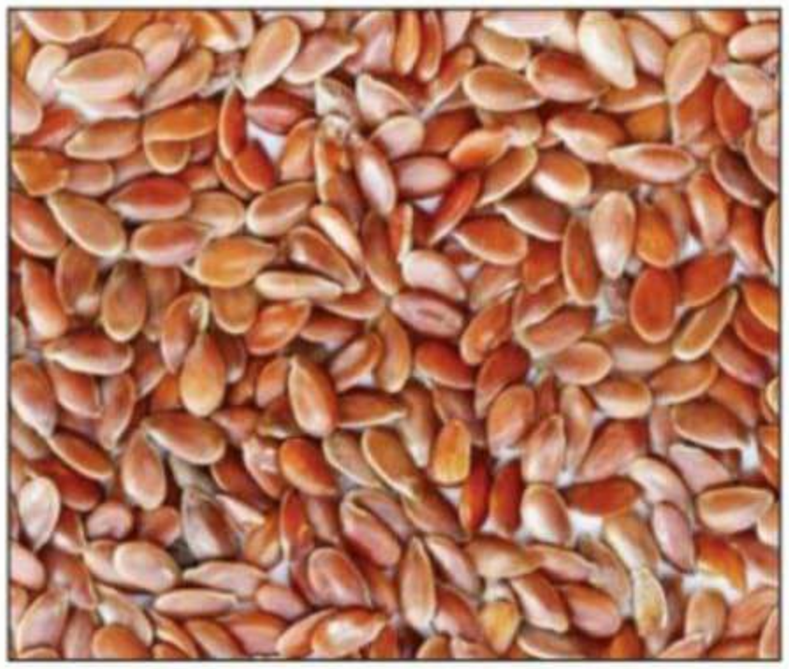

एसिड प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। डॉ राय ने बताया कि अलसी की बुवाई का समय बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए अक्टूबर का प्रथम पखवारा तथा शेष उत्तर प्रदेश में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में बुवाई करनी चाहिए। बुवाई हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अलसी की प्रजातियां जैसे गरिमा, शुभरा, श्वेता, नीलम, पद्मिनी, शेखर, गौरव, शिखा, रश्मि, पार्वती, रुचि सहित अन्य हैं जबकि वर्ष 2019 में विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या एवं अन्नू प्रजातियां पूरे देश के लिए संस्तुति हैं उन्होंने बताया कि सामान्यतः अलसी में ओमेगा-3 फैटी एसिड 50 से 62 प्रतिशत होता है जबकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या प्रजाति में ओमेगा-3 फैटी एसिड 62.7 प्रतिशत पाया जाता है। उन्होंने इसके प्रयोग से होने वाले लाभों के बारे में बताया कि ओमेगा-3 कोलेस्ट्रॉल को घटाता है अर्थराइटिस की समस्या को दूर करता है। इसमें 20 से 22त्न रेशा होता है जो मधुमेह को कम करता है अलसी में लिग्निन भी पाया जाता है जो कैंसर को नियंत्रित करने में लाभकारी है विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह ने बताया कि अलसी के तेल से ओमेगा 3 कैप्सूल दवाइयों के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा मिल्क केक, बिस्किट के लिए बेकरी में भी प्रयोग होता है। तथा लड्डू बर्फी जैसी मिठाइयां भी बनती हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभकारी हैं।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 87 कानपुर, मंगलवार 26 सितम्बर 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

rivaswaroop.in

अलसी की वैज्ञानिक विधि से करें खेती, होगा भारी लाभ

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित दिलीप नगर कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि अलसी की खेती बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि इससे तेल के साथ-साथ रेशा भी निकलता है उन्होंने बताया कि पूरे देश में अलसी का क्षेत्रफल 7.98 लाख हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल वर्ष 2018-19 में 0.28 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 0.18 लाख मैट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि इसमें प्रोटीन 18 से 20ब, कार्बोहाइड्रेट 18 से 88ब, वसा 38 से 42ब,कैलोरी 530 किलो कैलोरी, रेशा 20 से 22ब, विटामिंस, मिनरल्स के साथ-साथ एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि अलसी में ओमेगा 3 फैटी एसिड प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। डॉ राय ने बताया कि अलसी की बुवाई का समय बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए अक्टूबर का प्रथम पखवारा तथा शेष उत्तर प्रदेश में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में बुवाई करनी चाहिए। बुवाई हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अलसी की

प्रजातियां जैसे गरिमा, शुभरा, श्वेता नीलम पद्मिनी शेखर, गौरव ,शिखा, रश्मि, पार्वती, रुचि सहित अन्य हैं जबकि वर्ष 2019 में विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या एवं अन्नू प्रजातियां पूरे देश के लिए संस्तुति हैं उन्होंने बताया कि सामान्यत: अलसी में ओमेगा-3 फैटी एसिड 50 से 62ब होता है जबकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या प्रजाति में ओमेगा-3 फैटी एसिड 62.7ब पाया जाता है। उन्होंने इसके प्रयोग से होने वाले लाभों के बारे में बताया कि ओमेगा-3 कोलेस्ट्रॉल को घटाता है अर्थराइटिस की समस्या को दूर करता है। इसमें 20 से 22ब रेशा होता है जो मधुमेह को कम करता है अलसी में लिग्निन भी पाया जाता है जो कैंसर को नियंत्रित करने में लाभकारी है विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह ने बताया कि अलसी के तेल से ओमेगा 3 कैप्सूल दवाइयों के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा मिल्क केक, बिस्किट के लिए बेकरी में भी प्रयोग होता है। तथा लड्डू बर्फी जैसी मिठाइयां भी बनती हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभकारी हैं।

गांव देहात की खबर,शहर पर भी नजर

दि ग्राम टुडे

2023 | वर्ष:06 अंक: 34 | पेज: 08, मूल्य: 2 रूपये | उत्तराखंड,मध्य-प्रदेश,उत्तर-प्रदेश,राजस्थान,बिहार,महाराष्ट्र,गुजरात,संघ प्र

अलसी की वैज्ञानिक विधि से खेती करने से होगा लाभ.. डॉक्टर राजेश राय

दि ग्राम टुडे, कानपुर। (संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित दिलीप नगर कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रसार वैज्ञानिक डॉ राजेश राय ने बताया कि अलसी की खेती बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि इससे तेल के साथ-साथ रेशा भी निकलता है ।उन्होंने बताया कि पूरे देश में अलसी का क्षेत्रफल 7.98 लाख हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल वर्ष 2018-19 में 0.28 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 0.18 लाख मैट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि इसमें प्रोटीन 18 से 20%, कार्बोहाइड्रेट 18 से 88%, वसा 38 से 42%,कैलोरी 530 किलो कैलोरी, रेशा 20 से 22%, विटामिंस, मिनरल्स के साथ-साथ एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि अलसी में ओमेगा 3 फैटी एसिड प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। डॉ राय ने बताया कि अलसी की बुवाई का समय बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए अक्टूबर का प्रथम पखवारा तथा शेष उत्तर प्रदेश में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में बुवाई करनी चाहिए। बुवाई हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अलसी की प्रजातियां जैसे गरिमा, शुभरा, श्वेता, नीलम,पद्मिनी,शेखर,गौरव,शिखा,रश्मि,पार्वती, रुचि सहित अन्य हैं जबकि वर्ष 2019 में विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या एवं अन्नू प्रजातियां पूरे देश के लिए संस्तुति हैं उन्होंने बताया कि सामान्यतः अलसी में ओमेगा-3 फैटी एसिड 50 से 62% होता है जबकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूर्या प्रजाति में ओमेगा-3 फैटी एसिड 62.7% पाया जाता है। उन्होंने इसके प्रयोग से होने वाले लाभों के बारे में बताया कि ओमेगा-3 कोलेस्ट्रॉल को घटाता है अर्थराइटिस की समस्या को दूर करता है। इसमें 20 से 22% रेशा

होता है जो मधुमेह को कम करता है अलसी में लिग्निन भी पाया जाता है जो कैंसर को नियंत्रित करने में लाभकारी है विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह ने बताया कि अलसी के तेल से ओमेगा 3 कैप्सूल दवाइयों के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा मिल्क केक, बिस्किट के लिए बेकरी में भी प्रयोग होता है। तथा लड्डू बर्फी जैसी मिठाइयां भी बनती हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत लाभकारी हैं।